चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	04.07.2020	01	01-05

एचएयू का सात सूत्रीय अभियान • कोरोना से बचाव के लिए वीसी ने स्टाफ-स्टूडेंट्स को वेबिनार में बताए संस्कृति के सूत्र

नमस्ते, दिन में दो बार स्नान, जूते-चप्पल घर में नहीं, बासी भोजन का त्याग, नीम के पत्ते, कपड़े घर से बाहर धोना और नित्य योग

महबूब अली | हिसार

भारतीय संस्कृति को अपनाकर कोरोना संक्रमण के खतरे से बचा जा सकता है। सनातन जीवन शैली में सब कुछ नियत था। हाथ जोड़कर अभिवादन हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। सामाजिक दूरी को आज पूरी दुनिया कोरोना से बचाव के लिए स्वीकार कर रही है। लेकिन हम पाश्चात्य संस्कृति के चक्कर में अपनी संस्कृति को भूला बैठे है। एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने वेबिनार, मैसेज के माध्यम से विवि के स्टाफ और छात्र एवं छात्राओं से यह अपील की है। विवि में एक तरह से सात सूत्रीय अभियान आगाज किया गया है। जिसके माध्यम से सभी को संस्कृति के सूत्र बताए जा रहे हैं। कुलपति प्रो. केपी सिंह का कहना है कि अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता लाना है। अभियान सात सूत्रों पर फोकस रहेगा। कोरोना से बचाव के मद्देनजर मास्क और सेनिटाइजर का प्रयोग भी जरूरी है।

वीसी ने भारतीय संस्कृति से जुड़े इन 7 सूत्रों को अपनाने का किया आह्वान

- **नमस्ते:** भारतीय संस्कृति में हाथ मिलाने की परंपरा कभी नहीं रही। हाथ जोड़कर अभिवादन करते थे। आज यही हाथ जोड़ने की परंपरा कोरोना जैसी महामारी में बचाव के काम आ रही है।
- **दो बार स्नान:** दो बार स्नान हमारी संस्कृति का हिस्सा था। सुबह स्नान कर पूजा पाठ करते थे और शाम को स्नान करके संध्या। कोरोना से बचने को हम बाहर से आने के बाद स्नान कर रहे हैं।
- **जूते-चप्पल घर में नहीं:** भारतीय संस्कृति में घर में जूते-चप्पल ले जाने की परंपरा नहीं थी। बाहर ही नल पर हाथ-पांव धोकर घर में प्रवेश करते थे। आज फिर से हम यही कर रहे हैं।
- **बासी भोजन का त्याग:** बासी भोजन हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं रहा। तीन समय घरों में ताजा भोजन बनाया जाता था। भोजन बच जाता था तो वह पशुओं को देते थे।
- **नीम के पत्ते:** पहले प्रत्येक घर में नीम का पेड़ होता था। नीम की दातून करते थे। चर्म रोग होने पर नीम के पानी से स्नान करते थे। आज दुनिया मान रही है कि नीम एंटी बैक्टीरियल है।
- **घर के बाहर कपड़े धोना:** पुरातन समय में लोग घर के बाहर तालाब या नदी में कपड़े धोते थे। कोरोना काल में फिर यही प्रयास है कि बाहर से आने पर कपड़े बाहर ही धोए जाएं।
- **योग जीव का हिस्सा:** भारतीय संस्कृति में योग सर्वोपरि रहा है। इससे हम अपनी श्वसन क्रिया को मजबूत करते थे। योग से शारीरिक मजबूती आती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	04.07.2020	04	01-05

राहत • 12 विद्यार्थियों ने तीन माह विदेशों में लिया विशेष प्रशिक्षण, प्रो.केपी सिंह बोले-ट्रेनिंग का करें यहां प्रयोग

तीन माह बाद ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से लौटे एचएयू के छात्रों के दल ने पूरा किया क्वारेंटाइन पीरियड, वीसी ने की मुलकात

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा और तब से ही एचएयू के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारेंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारेंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल एचएयू के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में चर्चा की। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है छात्रों का दल

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि एचएयू के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था।

छात्रों ने कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार

दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन एचएयू के कुलपति प्रो. के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल कीं। उन्होंने बताया कि ऑस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	04.07.2020	01	07-08

एचएयू में कृषि रसायन एवं उर्वरक में 1 वर्षीय डिप्लोमा शुरू, 30 सीटें

18 से 55 वर्ष तक के 12वीं पास कर सकेंगे आवेदन

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा। कुलपति प्रो. केपी सिंह के प्रयासों से इस तरह का डिप्लोमा युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। शुरुआत में एक वर्षीय इस डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की है, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया है। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डाट एचएयू ए.सी.डाट इनसे प्राप्त कर सकते हैं।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	04.07.2020	04	07-08

प्लास्टिक के प्रयोग से पर्यावरण को हो रहा नुकसान : प्रो. केपी सिंह

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे पर बोले वीसी

प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें

भास्कर न्यूज| हिसार

वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभाव को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप व अन्य चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा।

उक्त विचार एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है।

उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाने की शुरुआत हुई थी। कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	04.07.2020	01	06

मौसम अपडेट

आज से 6 जुलाई तक बूंदाबांदी के आसार

हिसार | शहर में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 44.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जोकि सामान्य से 5 डिग्री अधिक रहा। न्यूनतम तापमान में सामान्य से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया। रात का तापमान 31.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

एचएयू के कृषि मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि 27 जून से दक्षिण पश्चिमी मॉनसूनी हवाओं का टर्फ हिमालय की तलहटियों व उत्तर पूर्व व पूर्वोत्तर भागों की तरफ चले जाने से उत्तरी भारत में मॉनसूनी हवाएं कमजोर हो गई थी। शुक्रवार को मॉनसूनी हवाओं के टर्फ में बदलाव होना शुरू हो गया जिससे हवाएं फिर से मैदानी क्षेत्रों की तरफ बढ़नी शुरू हुई है तथा बंगाल की खाड़ी के साथ-साथ अरब सागर से भी नमी वाली हवाएं आने की संभावना है। मॉनसूनी हवाओं के आगे बढ़ने से 4 जुलाई से 6 जुलाई के बीच राज्य के सभी क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	04.07.2020	01	01-04

होसल बरकरार

कई छात्रों को प्रोजेक्ट बीच में छोड़कर विदेशों से लौटना पड़ा

विवि में जारी रही रिसर्च, विदेशों से जुड़ा काम प्रभावित

वैभव शर्मा • हिसार

तीन महीने छह दिन बाद भी शिक्षण कार्यों पर बंदिशें जारी है। ऐसे में हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय(एचएयू) और लाला लाजपत राश पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास)में रिसर्च को लेकर नए तथ्य सामने आए हैं। दोनों ही विश्वविद्यालयों को लॉकडाउन के दौरान और बाद में रिसर्च करने में कोई बड़ी दिक्कत नहीं आई। इस कार्य में प्रतिफल यह रहा कि लुवास ने तो कुछ अपने पुराने रिसर्च प्रोजेक्ट तक पूरे कर लिए। तो एचएयू ने भी अपने प्रोजेक्टों को जारी रखा। हालांकि विदेशी समन्वय से चल रही रिसर्च प्रभावित जरूरी हुई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय। • जागरण

द्वितीय वर्ष के छात्रों की रिसर्च रुकी

विदेशी शिक्षण संस्थानों के साथ चल रहे कई रिसर्च प्रोजेक्टों जैसे स्पार्क परियोजना, आइडपी प्रोजेक्ट में गए कई छात्रों को समय से पहले ही विदेशों से वापस आना पड़ा। इसके साथ ही कुछ विद्यार्थियों का समय पूरा होना तो वह भी लौट आए। विवि प्रशासन की मानें तो फाइनल इयर के विद्यार्थियों की रिसर्च आदि पूरी है मगर द्वितीय वर्ष के छात्रों को अब अनुसंधान शुरू करना चाहिए था मगर शिक्षण संस्थान बंद होने से यह प्रभावित हुआ है।

एचएयू में 90 से अधिक रिसर्च प्रोजेक्ट संचालित

एचएयू में करीब 90 से अधिक रिसर्च प्रोजेक्ट विभिन्न योजनाओं में चल रहे हैं। इसके साथ ही बाहर के केन्द्रों में भी रिसर्च कराई जाती है। कुछ समय तो विवि पूरी तरह से बंद रहा जिससे काफी काम रुके रहे। हालांकि इस दौरान एचएयू के फार्म पर फसलों को काटने से लेकर बोने तक का काम किया गया। इसके बाद जब लॉकडाउन-2 की घोषणा में अनुमति मिली तो फिर से कई कार्यों को शुरू कर दिया गया। लैब का काम भी किया जाने लगा।

लुवास ने कई प्रोजेक्ट किए पूरे

लुवास से ई-गवर्नेंस टीम के सदस्य डा. नीलेश ने बताया कि कई प्रोजेक्ट लुवास ने लॉकडाउन के दौरान पूरे किए हैं। इनमें से कुछ भारत सकरार के पास तक गए हैं। क्योंकि लुवास का फील्ड रिसर्च पशुओं के फार्म पर होता है, ऐसे में हमें फील्ड से इनपुट मिलता रहा, विज्ञानी लैब में उस इनपुट का प्रयोग करते रहे। रिसर्च में विद्यार्थी आएं या न आएं शिक्षकों को आना अनिवार्य है। इसके साथ प्रयोगों में उपयोग में लाए जाने वाले कैमिकल भी हमें समय पर मिले।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	04.07.2020	03	07-08

आस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड में तकनीकि तो भारत में मौसम पर निर्भर रिसर्च

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 12 सदस्यीय विद्यार्थियों का दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से लौटा है। शुक्रवार को क्वारंटाइन का समय समाप्त हुआ तो विवि प्रशासन ने छात्रों से अनुभव पूछे। इसमें छात्रों ने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी पर कई शोध हुए हैं। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनों का प्रयोग कर ग्रीन हाउस में वर्ष भर रिसर्च करते हैं। जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं। विकसित देश मशीनरी व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीक की अभी जरूरत है। (जासं)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	04.07.2020	12	01-06

तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद लौटा हकृवि का 12 सदस्यीय दल

ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को अपनाएं विद्यार्थी

- राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना संस्थागत विकास योजना के तहत गया था दल

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हकृवि के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सैंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की।

हिसार। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा हकृवि विद्यार्थियों का दल कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह के साथ मुलाकात करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हर वर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रोफेसर केपी सिंह ने बताया कि हकृवि के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना-संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं। कुलपति ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी तथा दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनके टेस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

ये विद्यार्थी थे दल में शामिल

विदेश गए हकृवि के दल में बीएससी अंतिम वर्ष से आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज शामिल थे। उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. केपी सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर विद्यार्थियों ने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं। जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	04.07.2020	03	07-08

हकृवि में कृषि रसायन एवं उर्वरक में डिप्लोमा आरंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हकृवि में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा। जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं। जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। आवदेन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छूक इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल व कृषि महाविद्यालय बावल के लिए अलग-अलग होंगे। उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	04.07.2020	11	03-04

प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह

■ दुष्प्रभाव को जानते हुए भी कर रहे इसका इस्तेमाल

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर मौजूदा पर्यावरण को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। यह विचार हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें। प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	04.07.2020	04	01-04

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटे विद्यार्थियों के दल से मिले कुलपति

हिसार, 3 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के एक 12 सदस्यीय दल ने कुलपति प्रो. के.पी. सिंह से मुलाकात की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस 3 महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा विद्यार्थियों का दल कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के साथ मुलाकात करते हुए।

विदेश से आने के बाद क्वारंटाइन हो गया था दल

3 महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों का यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाऊस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की।

प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना-संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति ने बताया कि विद्यार्थियों के 2 दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनके टैस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बी.एस.सी. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल कीं। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाऊस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	04.07.2020	04	02-03

कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा से युवा होंगे स्वावलंबी

हिसार, 3 जुलाई (ब्यूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

30 सीटों पर होगा दाखिला : पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिनमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक के आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि 2 सैमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80:20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम 6 महीने और अधिकतम 2 वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	04.07.2020	02	03-04

एचएयू में कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा होगा शुरू, 30 सीटें की गईं निर्धारित

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में नए सत्र से कृषि रसायन व उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में अहम भूमिका निभाएगा। इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा। यह डिप्लोमा उन अभ्यर्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा, जिन्हें कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमा धारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	04.07.2020	02	01-02

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड से लौटे एचएयू के विद्यार्थी वीसी से मिले

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से हिसार लौटा। क्वारंटीन अवधि पूरी होने के बाद शुक्रवार को यह दल कुलपति प्रो. केपी सिंह से मिला और प्रशिक्षण के बारे में चर्चा की। विद्यार्थियों ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर कई जानकारियां हासिल कीं। वहां रतुआ बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	03.07.2020	--	--

कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा करके युवा होंगे स्वावलंबी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार शुरू होगा कोर्स

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hau.ac.in से प्राप्त कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

बहुत की लाभप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यकर्ता, एग्री इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ाने में सहायक होगा। इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमाधारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	03.07.2020	--	--

'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' के अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह : प्रोफेसर के.पी. सिंह

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सदियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य विकल्प हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपने दैनिक जीवन में उनको अपनाना चाहिए। प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सदियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	03.07.2020	--	--

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी: प्रो. के.पी. सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैक्लटी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

हिसार। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के साथ मुलाकात करते हुए।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति महोदय ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनके टेस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार

दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रयासों से ही वे सकुशल अपने वतन लौट पाए हैं, जिसके लिए कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का धन्यवाद करते हैं।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं। उन्होंने बताया कि विकसित देश मशीनरी व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीकें अपनाने की अभी जरूरत है।

तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

कुलपति ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ किया उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों व अनुसंधान को बढ़ावा देने का आह्वान

राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत 10 व 13 मार्च को गया था दल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	03.07.2020	--	--

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : प्रोफेसर के.पी. सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जुलाई : प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आहवान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बतया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति	03.07.2020	--	--

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : वीसी

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना-संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति महोदय ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कशीज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे। विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति	03.07.2020	--	--

हकृवि में शुरू होगा कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा

कोर्स में आवदेन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवदेन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

लाभप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यकर्ता, एग्री इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ाने में सहायक होगा।

इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमाधारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	03.07.2020	--	--

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : प्रो. सिंह

तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा हकृवि के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैक्लटी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में ओर अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति महोदय ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनके टेस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार

दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रयासों से ही वे सकुशल अपने वतन लौट पाए हैं, जिसके लिए कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का धन्यवाद करते हैं।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं।

उन्होंने बताया कि विकसित देश मशीनरी व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीकें अपनाने की अभी जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	03.07.2020	--	--

'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने का ले निश्चय : प्रो. सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने व्यक्त किए।

उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य विकल्प हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपने दैनिक जीवन में उनको अपनाना चाहिए।

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सदियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	03.07.2020	--	--

कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा से युवा होंगे स्वावलंबी

हकृवि में पहली बार शुरू होगा कोर्स

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hau.ac.in से प्राप्त कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

बहुत की लाभप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यकर्ता, एग्री इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ाने में सहायक होगा। इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमाधारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	**03.07.2020**	---	---

30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवदेन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छूक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hau.ac.in से प्राप्त कर सकते हैं।

पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	**03.07.2020**	---	---

H.A.U में कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू होगा

July 3, 2020 • Rakesh • Haryana News

हिसार: 3 जुलाई 2020

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	**03.07.2020**	---	---

न केवल मासूम पशु पक्षियों व पर्यावरण को बल्कि आने वाली पीढ़ियों को होगा प्लास्टिक का नुकसान : केपी सिंह

SHARE 0

'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह

हिसार,
वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा।
यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' के अवसर जनता से प्लास्टिक छोड़ने का आह्वान करते हुए कही। उन्होंने कहा कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य विकल्प हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपने दैनिक जीवन में उनको अपनाना चाहिए। प्रोफेसर केपी सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सदियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	03.07.2020	---	---

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : केपी सिंह

SHARE 0

तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सैंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियां आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रोफेसर केपी सिंह ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति महोदय ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनके टेस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार

दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू, संध्या, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रतीक, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हौसला अफजाई करते रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रयासों से ही वे सकुशल अपने वतन लौट पाए हैं, जिसके लिए कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का धन्यवाद करते हैं।

गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं। उन्होंने बताया कि विकसित देश मशीनरी व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीकें अपनाने की अभी जरूरत है।